अध्याय-4

शब्द विचार (ख)

शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तब वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका सम्बन्ध स्थापित होता है तथा इस सम्बन्ध की अभिव्यक्ति के लिए शब्द कई स्वरूपों में प्रकट होता है। प्रयोग अथवा रूप परिवर्तन की दृष्टि से शब्दों के दो भेद किये गये हैं–

शब्द

- विकारी शब्द
  - संज्ञा
  - सर्वनाम
  - विशेषण
  - क्रिया
- अविकारी शब्द
  - क्रिया विशेषण
  - समुच्चय बोधक
  - सम्बन्ध बोधक
  - विस्मयादि बोधक

संज्ञा

साधारण शब्दों में 'नाम' को ही संज्ञा कहते हैं। जैसे 'राम ने आगरा में सुन्दर ताजमहल देखा।' इस वाक्य में हम पाते हैं कि 'राम' एक व्यक्ति का नाम है, आगरा स्थान का नाम है, ताजमहल एक वस्तु का नाम है तथा 'सुन्दर' एक गुण का नाम है। इस प्रकार ये चारों क्रमशः व्यक्ति, स्थान, वस्तु और भाव के नाम हैं। अतः ये चारों संज्ञाएँ हुईं।

परिभाषा–'किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।'

संज्ञा के भेद–

संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा–जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा, 'विशेष' का बोध कराती है 'सामान्य' का नहीं। प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओं, समाचार-पत्रों, दिनों, महीनों आदि के नाम आते हैं।

2. जातिवाचक संज्ञा–जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता हो, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं। गाय, आदमी, पुस्तक, नदी आदि शब्द अपनी पूरी जाति का बोध कराते हैं, इसलिए जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। प्राय: जातिवाचक संज्ञा में वस्तुओं, पशु-पक्षियों, फल-फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़-जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

3. भाववाचक संज्ञा–जिस संज्ञा शब्द से प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं। प्राय: गुण-दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्तभाव तथा क्रिया के मूलरूप भाववाचक संज्ञा के अंतर्गत आते हैं।

भाववाचक संज्ञा की **रचना** मुख्य पाँच प्रकार के शब्दों से होती है–

1. जातिवाचक संज्ञा से
2. सर्वनाम से
3. विशेषण से
4. क्रिया से
5. अव्यय से

1. जातिवाचक संज्ञा से–

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
शिशु	शैशव, शिशुता
विद्वान	विद्वता
मित्र	मित्रता
पशु	पशुता
पुरुष	पुरुषत्व
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
गुरु	गौरव
बच्चा	बचपन
सेवक	सेवा
सज्जन	सज्जनता
आदमी	आदमियत
इंसान	इंसानियत
दानव	दानवता
बूढ़ा	बुढ़ापा
बंधु	बंधुत्व
व्यक्ति	व्यक्तित्व

ईश्वर	ऐश्वर्य
चोर	चोरी
ठग	ठगी

2. सर्वनाम से–

सर्वनाम	**भाववाचक संज्ञा**
मम	ममता/ममत्व
स्व	स्वत्व
आप	आपा
सर्व	सर्वस्व
निज	निजत्व
अपना	अपनापन/अपनत्व
एक	एकता

3. विशेषण से–

विशेषण	**भाववाचक संज्ञा**
भयानक	भय
विधवा	वैधव्य
चालाक	चालाकी
शिष्ट	शिष्टता
ऊँचा	ऊँचाई
नम्र	नम्रता
बुरा	बुराई
मोटा	मोटापा
स्वस्थ	स्वास्थ्य
मीठा	मिठास
सरल	सरलता
शूर	शूरता/शौर्य
लोभी	लोभ
सहायक	सहायता
आलसी	आलस्य
प्यासा	प्यास
निपुण	निपुणता
बहुत	बहुतायत
मूर्ख	मूर्खता

वीर	वीरता
न्यून	न्यूनता
आवश्यक	आवश्यकता
हरा	हरियाली
भूखा	भूख
पतित	पतन
सुन्दर	सुन्दरता
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता
काला	कालिमा/कालापन
निर्बल	निर्बलता

4. क्रिया से–

क्रिया	**भाववाचक संज्ञा**
सुनना	सुनवाई
गिरना	गिरावट
चलना	चाल
कमाना	कमाई
बैठना	बैठक
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
जीना	जीवन
चमकना	चमक
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
पढ़ना	पढ़ाई
जमना	जमाव
पूजना	पूजा
हँसना	हँसी
गूँजना	गूँज
जलना	जलन
भूलना	भूल
गाना	गान
उड़ना	उड़ान

हारना	हार
थकना	थकावट / थकान
पीना	पान
बिकना	बिक्री

5. अव्यय से–

अव्यय	**भाववाचक संज्ञा**
दूर	दूरी
ऊपर	ऊपरी
धिक्	धिक्कार
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही
निकट	निकटता
नीचे	निचाई
समीप	सामीप्य

सर्वनाम

भाषा में सुन्दरता, संक्षिप्तता एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है वह 'सर्वनाम' होता है। सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है 'सब का नाम'। अर्थात् सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। इससे वाक्य सहज एवं सरल हो जाता है। जैसे–सीता आज शाला नहीं आई क्योंकि सीता बीमार है। इसके स्थान पर यदि यह कहा जाए 'सीता आज शाला नहीं आई क्योंकि 'वह' बीमार है तो सर्वनाम के प्रयोग से यह वाक्य अधिक सरल एवं सुन्दर बन जाएगा।'

परिभाषा–'संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।' जैसे–मैं, तुम, वह, हम, आप, उसका आदि।

सर्वनाम के भेद–सर्वनाम के निम्नलिखित छः भेद हैं–

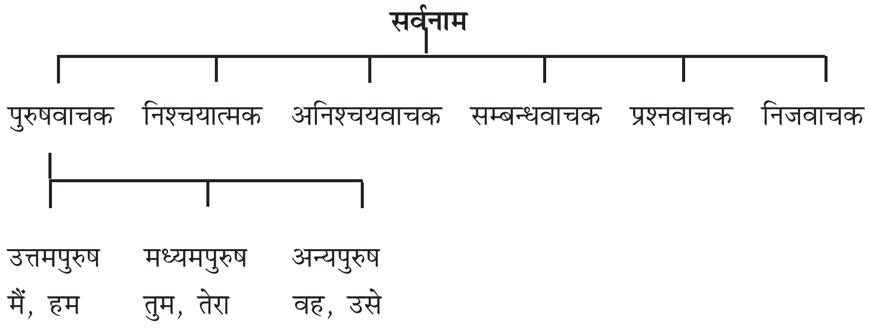

जो, सो, उसकी कौन, किससे, स्वयं, स्वतः

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम–जिन सर्वनामों का प्रयोग कहने वाले, सुनने वाले व जिसके विषय में कहा जाए–के स्थान पर किया जाता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं–

(अ) उत्तम पुरुष–बोलने वाला या लिखने वाला व्यक्ति अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है वे उत्तम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं–जैसे मैं, हम, हम सब, हम लोग आदि।

(ब) मध्यम पुरुष–जिसे सम्बोधित करके कुछ कहा जाए या जिससे बातें की जाए या जिसके बारे में कुछ लिखा जाए, उनके नाम के बदले में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम मध्यम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–तू, तुम, आप, आप लोग, आप सब।

(स) अन्य पुरुष–जिसके बारे में बात की जाए या कुछ लिखा जाए, उनके नाम के बदले में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–वे, वे लोग, ये, यह, आप।

(ii) निश्चय वाचक सर्वनाम–जो सर्वनाम निकटस्थ अथवा दूरस्थ व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चित संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

इसके मुख्य दो प्रयोग हैं–

(i) निकट की वस्तुओं के लिए–यह, ये।

(ii) दूर की वस्तुओं के लिए–वह, वे।

(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम–जिस सर्वनाम से किसी ऐसे व्यक्ति या पदार्थ का बोध होता हो जिसके विषय में निश्चित सूचना नहीं मिलती, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–कुछ, कोई।

'कोई' सर्वनाम का प्रयोग प्राय: प्राणिवाचक सर्वनाम के लिए होता है। जैसे–कोई उसे बुला रहा है।

'कुछ' सर्वनाम का प्रयोग वस्तु के लिए होता है, जैसे–कुछ केले यहाँ पड़े हैं। कुछ रुपये दे दो।

(iv) सम्बन्धवाचक सर्वनाम–दो उपवाक्यों के बीच में प्रयुक्त होकर एक उपवाक्य की संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाला सर्वनाम सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाता है।

जैसे– जो, जिसे, जिसका, जिसको।

जो सोएगा, सो खोएगा।

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

जो सत्य बोलता है, वह नहीं डरता।

(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम–जिस सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–क्या, किससे, कौन।

वहाँ दरवाजे पर कौन खड़ा है?

कल तुम किससे बात कर रहे थे?

आज तुम्हें क्या चाहिए?

(vi) निज वाचक सर्वनाम–ऐसे सर्वनाम जिनका प्रयोग वक्ता या लेखक (स्वयं) अपने लिए करते हैं, निजवाचक कहलाते हैं। यथा–आप, अपना, स्वयं, खुद आदि। जैसे–मैं अपनी पुस्तक पढ़ रहा हूँ। आप मेरे घर कब आ रहे हैं? इन वाक्यों में 'अपनी' तथा 'मेरे' शब्द निजवाचक सर्वनाम हैं।

क्रिया

क्रिया का अर्थ है करना। क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता। किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से ही होती है। हिन्दी भाषा की जननी संस्कृत है तथा संस्कृत में क्रिया रूप को 'धातु' कहते हैं।

धातु– हिन्दी क्रिया पदों का मूल रूप ही 'धातु' है।

धातु में 'ना' जोड़ने से हिन्दी के क्रिया पद बनते हैं, जैसे–

पढ़ + ना = पढ़ना, उठ + ना = उठना आदि।

परिभाषा–'जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।'

क्रिया के भेद

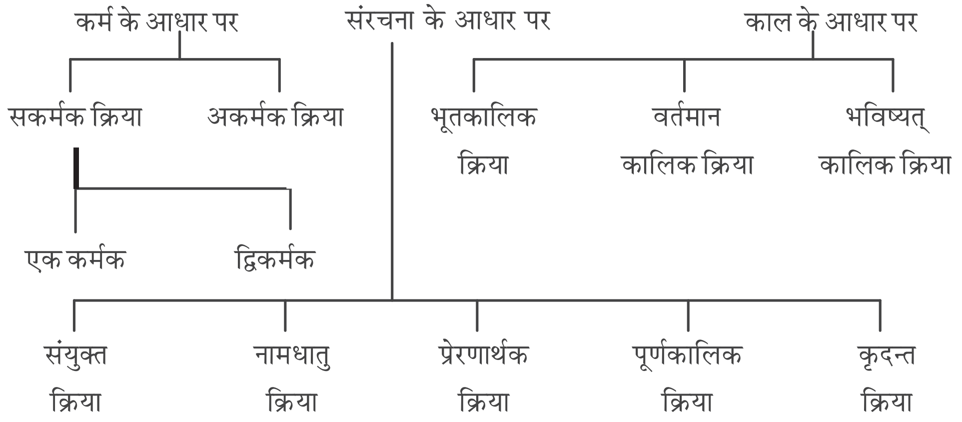

1. कर्म के आधार पर–क्रिया शब्द का फल किस पर पड़ रहा है, वह किसे प्रभावित कर रहा है, इस आधार पर किया जाने वाला भेद कर्म के आधार क्रिया के भेद के अन्तर्गत आता है। इस आधार पर क्रिया के प्रमुख दो भेद हैं–

(अ) सकर्मक क्रिया–स अर्थात् सहित, अतः सकर्मक का अर्थ है–कर्म के साथ।

परिभाषा–'जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।'

जैसे–बच्चा चित्र बना रहा है या गीता सितार बजा रही है।

अब यदि प्रश्न किया जाए कि बच्चा क्या बना रहा है तो उत्तर होगा–'चित्र' (कर्म) तथा गीता क्या बजा रही है तो उत्तर होगा–'सितार' (कर्म)।

सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं–

(i) एक कर्मक–जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–'माँ अखबार पढ़ रही है।' यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म (पढ़ना) हो रहा है।

(ii) द्विकर्मक क्रिया–जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हों, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे–अध्यापक छात्रों को कम्प्यूटर सिखा रहे हैं। क्या सिखा रहे हैं? –कम्प्यूटर। किसे सिखा रहे हैं? –छात्रों को (छात्र सीख रहे हैं।) इस प्रकार दो कर्म एक साथ घटित हो रहे हैं।

(ब) अकर्मक क्रिया–जिस वाक्य में क्रिया का प्रभाव या फल कर्ता पर पड़ता है क्योंकि कर्म प्रयुक्त नहीं होता उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–आशा गाती है। कौन गाती (कर्म) है? –आशा (कर्ता)।

2. संरचना के आधार पर–वाक्य में क्रिया का प्रयोग कहाँ किया जा रहा है, किस रूप में किया जा रहा है, के आधार पर किये जाने वाले भेद संरचना के आधार पर कहलाते हैं। इसके पाँच प्रकार हैं।

(अ) संयुक्त क्रिया–जब दो या दो से अधिक भिन्न अर्थ रखने वाली क्रियाओं का मेल हो, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे–अतिथि आ गए हैं। स्वागत करो। इस वाक्य में 'आ गए' मुख्य क्रिया है तथा 'स्वागत करो' सहायक क्रिया है। इस प्रकार मुख्य एवं सहायक क्रिया दोनों का संयोग है अतः इसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रियाएँ एक से अधिक भी हो सकती हैं।

(ब) नामधातु क्रिया–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द जब धातु की तरह प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'नामधातु' कहते हैं और इन नामधातु शब्दों में जब प्रत्यय लगाकर क्रिया का निर्माण किया जाता है तब वे शब्द 'नाम धातु क्रिया' कहलाते हैं। जैसे–

–हाथ (संज्ञा) – हथिया (नामधातु) – हथियाना (क्रिया)

–सूखा (विशेषण) – सूखा (नामधातु) – सुखाना (क्रिया)

–अपना (सर्वनाम) – अपना (नामधातु) – अपनाना (क्रिया)

(स) प्रेरणार्थक क्रिया–जब कर्ता स्वयं कार्य का संपादन न कर किसी दूसरे को करने के लिए प्रेरित करे या करवाए उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे–

सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया। इसमें सरपंच ने स्वयं कार्य नहीं किया, बल्कि अन्य लोगों को प्रेरित कर उनसे तालाब का निर्माण करवाया अतः यहाँ प्रेरणार्थक क्रिया है।

(द) पूर्णकालिक क्रिया–जब किसी वाक्य में दो क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हों तथा उनमें से एक क्रिया दूसरी क्रिया से पहले सम्पन्न हुई हो तो पहले सम्पन्न होने वाली क्रिया पूर्ण कालिक क्रिया कहलाती है।

इन क्रियाओं पर लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह अव्यय तथा क्रिया विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होती है।

मूल धातु में 'कर' लगाने से सामान्य क्रिया को पूर्णकालिक क्रिया का रूप दिया जा सकता है। जैसे–

–बलवीर खेलकर पढ़ने बैठेगा।

–वह पढ़कर सो गया।

इन वाक्यों में खेलकर ('खेल' मूल धातु + कर) एवं पढ़कर (पढ़ मूल धातु + कर) पूर्णकालिक क्रिया कहलाएगी।

पूर्णकालिक क्रिया का एक रूप 'तात्कालिक क्रिया' भी है। इसमें एक क्रिया के समाप्त होते ही तत्काल दूसरी क्रिया घटित होती है तथा धातु + ते से इस क्रिया पद का निर्माण होता है। जैसे–

पुलिस के आते ही चोर भाग गया।

इसमें 'आते ही' तात्कालिक क्रिया है।

(य) कृदन्त क्रिया–क्रिया शब्दों मे जुड़न वाले प्रत्यय 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं तथा कृत प्रत्ययों के योग से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं। क्रिया शब्दों के अन्त में प्रत्यय योग से बनी क्रिया कृदन्त क्रिया कहलाती है। जैसे–

क्रिया	कृदन्त क्रिया
चल–	चलना, चलता चलकर
लिख–	लिखना, लिखता, लिखकर।

(3) काल के आधार पर–जिस काल मे क्रिया सम्पन्न होती है उसके अनुसार क्रिया के तीन भेद हैं–

(अ) भूतकालिक क्रिया–क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा बीते समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, भूतकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे–वह विदेश चला गया। उसने बहुत सुन्दर गीत गाया।

(ब) वर्तमानकालिक क्रिया–क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, वर्तमानकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे–

गीता हॉकी खेल रही है। विमल पुस्तक पढ़ रहा है।

(स) भविष्यत् कालिक क्रिया–क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं। जैसे–

–गार्गी छुट्टियों में कश्मीर जाएगी।

–दिनेश निबन्ध प्रतियोगिता मे भाग लेगा।

विशेषण

विशेषता बतलाने वाला शब्द ही विशेषण कहलाता है। विशेषण के प्रयोग से व्यक्ति, वस्तु का यथार्थ स्वरूप तो प्रकट होता ही है साथ ही भाषा की प्रभावशीलता भी बढ़ जाती है।

परिभाषा–'ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, विशेषण कहलाते हैं।'

विशेषण जिस शब्द की विशेषता बतलाता है, वह शब्द 'विशेष्य' कहलाता है। जैसे–नीला आकाश, छोटी पुस्तक एवं भला व्यक्ति में **नीला, छोटी** एवं **भला** शब्द **विशेषण** है तथा **आकाश, पुस्तक** एवं **व्यक्ति विशेष्य** हैं।

विशेषण के प्रकार–

विशेषण पाँच प्रकार के होते हैं–

विशेषण

गुणवाचक | संज़्यावाचक | परिमाणवाचक | संकेतवाचक | व्यक्तिवाचक

(i) गुणवाचक–ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रूप, रंग, आकार, स्वभाव अथवा दशा का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे–पुराना कमीज, काला कुत्ता, मीठा आम आदि।

(ii) संख्यावाचक विशेषण–ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित/अनिश्चित **संख्या, क्रम** या **गणना** का बोध कराते हैं, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। यह दो प्रकार के होते हैं–(अ) निश्चित संख्या वाचक–जैसे–एक, दूसरा, तीनों, चौगुना आदि एवं (ब) अनिश्चय संख्यावाचक–जैसे–कई, कुछ, बहुत, सब आदि।

(iii) परिमाण वाचक–ऐसे शब्द जो किसी वस्तु, पदार्थ या जगह की **मात्रा, तौल** या **माप** का बोध कराते हैं वे परिमाण वाचक विशेषण कहलाते हैं। इसके दो उपभेद हैं–

(अ) निश्चित परिमाण वाचक–जैसे–दो लीटर, पाँच किलो एवं तीन मीटर आदि।

(ब) अनिश्चित परिमाण वाचक–जैसे–थोड़ा, बहुत, कम, ज्यादा आदि।

(iv) संकेतवाचक–ऐसे शब्द जो सर्वनाम हैं किन्तु वाक्य में विशेषण के रूप मे प्रयुक्त हो रहे हैं अर्थात् संज्ञा की विशेषता प्रकट कर रहे हैं वे संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं। चूंकि मूल रूप में ये सर्वनाम हैं इसलिए ये विशेषण 'सार्वनामिक विशेषण' भी कहलाते हैं।

जैसे–**इस** गेंद को मत फेंकों। **उस** पुस्तक को पढ़ो। **कोई** सज्जन आए हैं। इन वाक्यों में **इस, उस** तथा **कोई** शब्द सार्वनामिक अथवा संकेतवाचक विशेषण हैं।

(v) व्यक्तिवाचक विशेषण–ऐसे शब्द जो मूल रूप से व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं किन्तु वाक्य में विशेषण का कार्य कर रहे हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं। यद्यपि ये स्वयं संज्ञा शब्द हैं किन्तु वाक्य में अन्य संज्ञा शब्द की ही विशेषता बता रहे हैं। जैसे–**बनारसी** साड़ी, **कश्मीरी** सेब, **बीकानेरी** भुजिया आदि। इनमें बनारसी, कश्मीरी एवं बीकानेरी ऐसे ही संज्ञा शब्द हैं जो यहाँ विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

प्रविशेषण

ऐसे शब्द जो विशेषण की विशेषता बतलाते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं। जैसे–

वह बहुत परिश्रमी है। शीला अति विनम्र लड़की है। इन दोनों वाक्यों में परिश्रमी व विनम्र विशेषण हैं तथा 'बहुत' व 'अति' प्रविशेषण हैं।

विशेषण की रचना

कुछ शब्द मूल रूप में विशेषण ही होते हैं किन्तु कुछ संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया या अव्यय शब्दों के साथ प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाए जाते हैं। जैसे–

(i) संज्ञा से विशेषण–

संज्ञा + प्रत्यय = विशेषण

रंग + ईन = रंगीन

राष्ट्र + ईय = राष्ट्रीय

स्वर्ण + इम = स्वर्णिम

(ii) सर्वनाम से विशेषण–

मैं + एरा = मेरा

तुम + हारा = तुम्हारा

(iii) क्रिया से विशेषण–

पूजन + ईय = पूजनीय

लूट + एरा = लुटेरा

झगड़ा + आलू = झगड़ालू

(iv) अव्यय से विशेषण–

बाहर + ई = बाहरी

पीछे + ला = पिछला

(आ) अविकारी शब्द

ऐसे शब्द जिनके स्वरूप में लिंग, वचन, काल आदि के प्रभाव से कोई विकार नहीं होता अर्थात् कोई परिवर्तन नहीं होता–अविकारी शब्द कहलाते हैं।

अविकारी को ही अव्यय भी कहते हैं। अव्यय का शाब्दिक अर्थ–अ (नहीं) + व्यय (खर्च या परिवर्तन) है। अर्थात् किसी भी परिस्थिति में जिन शब्दों में विकार नहीं होता, परिवर्तन नहीं होता वे अविकारी या अव्यय शब्द कहलाते हैं. जैसे–यहाँ, वहाँ, धीरे, तेज, कब और आदि।

अव्यय के भेद–

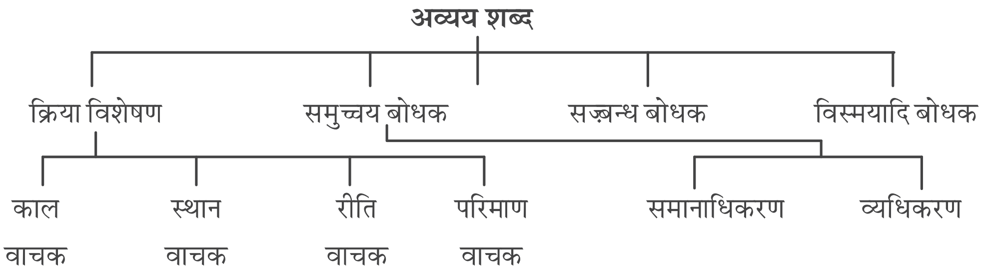

1. क्रिया-विशेषण–ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं। भेद–

यहाँ, वहाँ, जल्दी, बहुत आदि।

क्रिया विशेषण के मुख्यत: चार भेद हैं–

(अ) काल वाचक–ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया के होने का समय व्यक्त करते हैं, उन्हें काल वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे–आज मेरी परीक्षा है। तुम दिल्ली कब जाओगे? इन वाक्यों में 'आज'

एवं 'कब' काल वाचक क्रिया के उदाहरण हैं तथा अन्य उदाहरण कल, जब, प्रतिदिन, प्राय: अभी-अभी, लगातार, अब, तब, पहले, बाद में, तुरन्त, प्रात:आदि हैं।

(ब) स्थानवाचक–ऐसे अव्यय शब्द जिनसे क्रिया के घटित होने के स्थान का ज्ञान प्राप्त होता है उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे–यहाँ, वहाँ, वहीं, कहीं, ऊपर, नीचे, बाएँ, पास, दूर, अन्दर, बाहर, सामने, निकट आदि।

(स) रीतिवाचक–ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया की विधि या रीति को व्यक्त करें, रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। इनसे क्रिया के निश्चय, अनिश्चय, स्वीकार, कारण, निषेध आदि अर्थ प्रकट होते हैं। जैसे–तुम बहुत धीरे-धीरे चलते हो, जरा तेज कदम चलाओ, झटपट पहुँचना है। इसमें धीरे-धीरे, झटपट, तेज रीतिवाचक क्रिया विशेषण है।

(द) परिमाण वाचक–ऐसे अव्यय शब्द जो क्रिया की अधिकता, न्यूनता आदि परिमाण का बोध कराते हों। उन्हें परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे–

कितने रुपये लगेंगे? वह उतना ही भार उठा पएगा। जितना चाहो ले लो।

इन वाक्यों मे कितने, उतना एवं जितना शब्द परिमाण वाचक क्रिया विशेषण है।

2. समुच्चय बोधक–ऐसे अव्यय शब्द जो एक शब्द को दूसरे शब्द से, एक वाक्य को दूसरे वाक्य से अथवा एक वाक्यांश को दूसरे वाक्यांश से जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक विशेषण कहते हैं।

समुच्चय बोधक विशेषण दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य तो करते ही हैं साथ ही विकल्प बताने, परिणाम, अर्थ या कारण बताने एवं विभेद बताने का कार्य भी करते हैं।

समुच्चय बोधक के दो भेद हैं–

(अ) समानाधिकरण समुच्चय बोधक–ऐसे अव्यय जिनके द्वारा मुख्य वाक्य जोड़े जाते हैं। जो इस प्रकार हैं–

संयोजक अव्यय–और, तथा, एवं आदि।

विभाजक अव्यय–या, अथवा, कोई एक, कि, चाहे, नहीं तो, ना आदि।

विरोध प्रदर्शन–पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर, बल्कि, वरन् आदि।

परिणाम दर्शक–अत:, अतएव, सो, फलत: आदि।

(ब) व्यधिकरण समुच्चय बोधक–ऐसे अव्यय जो एक मुख्य वाक्य में एक या एक से अधिक आश्रित वाक्य जोड़ते हैं, व्यधिकरण समुच्चय बोधक कहलाते हैं।

जैसे–कारण वाचक–क्योंकि, इसलिए, के कारण, चूंकि आदि।

उद्देश्य वाचक–जोकि, ताकि आदि।

संकेतवाचक–यदि, तो, यद्यपि, तथापि, जब-तब आदि।

स्वरूप वाचक–कि, जो, अर्थात्, मानो आदि।

3. सम्बन्ध बोधक–ऐसे अव्यय जो संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्यगत दूसरे शब्दों से उसका सम्बन्ध बताते हैं, सम्बन्ध बोधक विशेषण कहलाते हैं। जैसे–

सीता की बहन गीता है। इसमें 'की' सम्बन्ध सूचक अव्यय है। इन्हें परसर्गीय शब्द भी कहते हैं। इनके भेद इस प्रकार हैं–

कालवाचक–आगे, पीछे, पूर्व, पश्चात्, उपरान्त आदि।

स्थानवाचक–पास, पीछे, ऊपर, आगे, बाहर, भीतर, समीप आदि।

दिशावाचक–तरफ, ओर, पार, आस–पास आदि।

साधन वाचक–द्वारा, जरिए, मारफत, हाथ, जबानी।

निमित्तवाचक–हेतु, हित, वास्ते, खातिर, फलस्वरूप, बदौलत।

विरोधवाचक–उल्टे, विपरीत, खिलाफ, विरुद्ध।

सादृश्यवाचक–समान, तुल्य, सम, भाँति, जैसा, तरह।

तुलनात्मक–अपेक्षा, सामने, बल्कि।

विनिमय वाचक–बदले, जगत, सिवा, अलावा, अतिरिक्त।

संग्रह वाचक–तक, मात्र, पर्यन्त, भर।

हेतु वाचक–सिवा, लिए, कारण, वास्ते।

4. विस्मयादि बोधक अव्यय–ऐसे अव्यय जिनके द्वारा मनोभावों की अभिव्यक्ति होती है। मनोभावों के परिणामस्वरूप इनका उच्चारण एक विशेष ध्वनि से होता है। अतः हर्ष, शोक, आश्चर्य, तिरस्कार आदि के भाव सूचित करने वाले अव्यय को विस्मयादि बोधक कहते हैं।

जैसे– हाय! अच्छाऽऽ! छिः! वाह! आदि।

हर्ष सूचक – अहा! वाह! शाबाश! बहुत खूब!

शोक सूचक – आह! हाय! ओह! उफ! राम–राम! आदि।

भय सूचक – अरे रे! बाप रे!

आश्चर्य सूचक – क्या? ऐं! हैं! आदि।

तिरस्कार सूचक – छिः! हट! धिक्! आदि।

स्वीकार सूचक – जी! हाँ!

अभिवादन सूचक – नमस्ते! प्रणाम! सलाम! बधाई!

चेतावनी सूचक – होशियार! खबरदार! सावधान!

कृतज्ञता सूचक – धन्यवाद! शुक्रिया! जिन्दाबाद!

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. संज्ञा के भेद हैं–

(अ) 2 (ब) 5

(स) 3 (द) 4 [ ]

प्र. 2. जो शब्द प्रयोगानुसार परिवर्तित होता है, कहलाता है–

(अ) विकारी शब्द (ब) विशेषण शब्द

(स) पदबन्ध (द) सर्वनाम शब्द [ ]

प्र. 3. दिए गए शब्दों में से जातिवाचक संज्ञा बतलाइये–

(अ) लकड़ी (ब) आप

(स) बुनना (द) रमेश [ ]

प्र. 4. अनिश्चय वाचक सर्वनाम है–

(अ) आप (ब) जिसकी

(स) कोई (द) क्या [ ]

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये–

प्र. 5. ------- भी बाजार जाना है। (सर्वनाम)

(अ) वहाँ (ब) वरना

(स) कल (द) मुझे [ ]

प्र. 6. वह --------- चलता है। (विशेषण)

(अ) रोज (ब) धीरे-धीरे

(स) कहाँ (द) सहारे से [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति दिए गए विकल्पों में से उचित अव्यय शब्द चुनकर करें–

प्र. 7. हमें अपनी सभ्यता --------- संस्कृति पर गर्व है।

(अ) या (ब) और

(स) अथवा (द) के साथ [ ]

प्र. 8. खूब मन लगाकर पढ़ो ---------- परीक्षा में प्रथम आओ।

(अ) ताकि (ब) चूंकि

(स) अन्यथा (द) क्योंकि [ ]

प्र. 9. हरीश ---------- सत्य बोलता है।

(अ) कभी-कभी (ब) कभी नहीं

(स) सदैव (द) क्योंकि [ ]

प्र.10. वहाँ मोहन के ---------- कोई नहीं था।

(अ) और (ब) अलावा

(स) या (द) अथवा [ ]

प्र.11. ------- बोलो, कोई सुन लेगा।

(अ) चिल्लाकर (ब) जोर से

(स) गाकर (द) धीरे [ ]

उत्तर–1. (स) 2. (अ) 3. (अ) 4. (स) 5. (द) 6. (ब) 7. (ब) 8. (अ) 9. (स) 10. (ब) 11. (द)

प्र.12. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइये–
इन्सान, लड़की, बच्चा, अपना, गन्दा, हँसी।

प्र.13. सार्वनामिक विशेषण की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिये।

प्र.14. अव्यय किसे कहते हैं, भेद लिखिये।

प्र.15. विकारी एवं अविकारी शब्द में अन्तर लिखिए।

प्र.16. समुच्चय बोधक अव्यय का विस्तार से वर्णन कीजिए।

प्र.17. क्रिया के कितने भेद हैं?

प्र.18. संरचना के आधार पर क्रिया के कितने भेद हैं?

प्र.19. निम्नांकित विस्मयादि बोधक शब्दों पर वाक्यों की रचना कीजिए–
अरे, छिः, आह, शाबाश, वाह।

प्र.20. विकारी एवं अविकारी शब्द रूपों की एक तालिका तैयार कीजिए जिसमें भेद एवं उपभेद विस्तार से बतलाए गए हों।

प्र.21. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विशेषण व उनके भेद बतलाइये–

	वाक्य	**विशेषण**	**भेद**
(i)	बगीचे में आम के पेड़ हैं।	___________	___________
(ii)	वे पुस्तकें तुम्हारी हैं।	___________	___________
(iii)	हमने काले कोट बनवाए हैं।	___________	___________
(iv)	सफेद कबूतर आया है।	___________	___________
(v)	वह विदेश से वापस आ गया है।	___________	___________
(vi)	बच्चा रो रहा है, उसे गोद में उठा लो।	___________	___________
(vii)	सुरेश खिलाड़ी पिता का पुत्र है?	___________	___________
(viii)	वह लड़का तेज भागता है।	___________	___________
(ix)	प्रेमचन्द महान (लेखक, उपन्यासकार) हैं।	___________	___________
(x)	कर्ण दानवीर थे।	___________	___________

प्र.22. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया व भेद बतलाइये–

	वाक्य	**क्रिया**	**भेद**
(i)	ये सभी पहलवानी करते हैं।	___________	___________
(ii)	ये सब्जियाँ बेचते हैं।	___________	___________
(iii)	गुरुजी गणित पढ़ाते हैं।	___________	___________
(iv)	गाड़ी का टायर फट गया है।	___________	___________

(v)	लता कविता लिख रही है।	________	________
(vi)	विनीत क्रिकेट खेल रहा है।	________	________
(vii)	मैं डॉक्टर बनूँगा।	________	________
(viii)	वह रोज दूध पीता है।	________	________
(ix)	प्रधानमंत्री अमेरिका जायेंगे।	________	________
(x)	सरकार बच्चों को नि:शुल्क पढ़ाती है।	________	________

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा–

जातिवाचक	**भाववाचक**	**जातिवाचक**	**भाववाचक**
मित्र	मित्रता	सज्जन	सज्जनता
पुरुष	पौरुष	दानव	दानवता
सती	सतीत्व	ब्राह्मण	ब्राह्मणत्व
सेवक	सेवा	ठग	ठगी
व्यक्ति	व्यक्तित्व		
सर्वनाम	**भाववाचक**	**सर्वनाम**	**भाववाचक**
मम	ममता	सर्व	सर्वस्व
स्व	स्वत्व	अपना	अपनत्व
विशेषण	**भाववाचक**	**विशेषण**	**भाववाचक**
चालाक	चालाकी	निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता	बहुत	बहुतायत
सूक्ष्म	सूक्ष्मता	हरा	हरियाली
ऊँचा	ऊँचाई	सुन्दर	सुन्दरता
क्रिया	**भाववाचक**	**क्रिया**	**भाववाचक**
बैठना	बैठक	हँसना	हँसी
पहचानना	पहचान	जलना	जलन
खेलना	खेल	भूलना	भूल
जीना	जीवन	गाना	गान
लिखना	लिखावट	उड़ना	उड़ान
बिकना	बिक्री		

अव्यय	भाववाचक	अव्यय	भाववाचक
दूर	दूरी	मना	मनाही
ऊपर	ऊपरी	निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता	समीप	सामीप्य

प्र.23. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित अव्यय से कीजिये–

(i) पिता ----- पुत्र घूमने जा रहे हैं।

(ii) मैं ----- वहीं था।

(iii) तुम ----- उठो।

(iv) ----- क्या छक्का मारा है।

(v) आजकल सच्चाई --- कोई नहीं पूछता।

(vi) ----- अब मैं क्या करूँ।

(vii) ----- कितनी सुन्दर झील है।

(viii) आप कूड़ा ----- फेंकते हैं।

(ix) वह बहुत देर ----- रोता रहा।

(x) ----- मैं तो भूल ही गया था।

(xi) ----- तुम्हें क्या हो गया है।

(xii) वह अब ----- पढ़ रहा है?

(xiii) मुझे ----- पैसे चाहिये।

(xiv) पैट्रोल के ---- कार नहीं चल सकती।

(xv) वर्षों से ----- कोई नहीं आया।

(xvi) उसकी हालत ----- खराब है।

(xvii) स्कूल मेरे घर ----- है।

(xviii) वह ----- नहीं पढ़ता है।

(xix) ----- मैं लुट गया।

(xx) विवेक अब ----- स्वस्थ है।